Dr. REETU RAJ

Assistant Professor

Department of HISTORY

RAJA SINGH COLLEGE SIWAN

(Jai Prakash University Chapra)

Lecture Notes on "_ प्राचीन भारतीय इतिहास के पुरातात्विक स्रोत।"(Note ---1)

(for TDC Part 1 HISTORY HONOURS)

प्राचीन भारतीय इतिहास के पुरातात्विक स्रोत।

पुरातात्विक स्त्रोत [Archaeological Sources]

प्राचीन भारत के अध्ययन के लिए पुरातात्विक स्त्रोतों का विशेष महत्व है। पुरातात्विक स्रोत, साहित्यिक स्त्रोतों से अधिक प्रामाणिक माने जाते हैं, क्योंकि उनमें कवि की परिकल्पना अथवा लेखक की कल्पना शक्ति के लिए स्थान का अभाव होता है। इसके अतिरिक्त जहाँ पर साहित्यिक स्त्रोत मौन हैं, वहाँ पुरातात्विक स्त्रोत ही वस्तुस्थिति को स्पष्ट करते हैं। प्राचीन भारतीय इतिहास के विषय में जानकारी देने वाले प्रमुख पुरातात्विक स्त्रोत निम्नांकित हैं=

(i) अभिलेख, (ii) स्मारक और भग्नावशेष, (iii) मुद्राए, (iv) कलाकृतियाँ, (v) मिट्टी के बर्तन।

(i) अभिलेख- अभिलेख, प्राचीन भारतीय इतिहास की जानकारी के महत्त्वपूर्ण और प्रामाणिक स्त्रोत माने जाते हैं, क्योंकि अभिलेख समकालीन होते हैं। जिस राजा अथवा

राज्य के विषय में अभिलेख पर लिखा होता है, अभिलेख की रचना भी उसी राजा के शासनकाल में की गई होती है। अत: उस तथ्य के सत्य होने की सम्भावना अधिक होती है। अभिलेखों से तत्कालीन राजनीतिक एवं सामाजिक स्थिति की जानकारी प्राप्त होती है। इसके अतिरिक्त

अभिलेख, राज्य की सीमाओं और राजा के व्यक्तित्व के विषय में भी सटीक जानकारी प्रदान करते हैं। अभिलेखों के महत्व के सन्दर्भ में डॉ. रमेश चन्द्र मजमूदार ने लिखा है, "अभिलेख समसामयिक होने के कारण विश्वसनीय प्रमाण हैं और उनसे हमें सबसे अधिक सहायता मिली है।"

अभिलेख विभिन्न रूपों में प्राप्त हुए हैं। शिला पर लिखे गए अभिलेख को शिलालेख स्तम्भ पर लिखे गए अभिलेख को स्तम्भ-लेख, ताम्र पत्र पर लिखे गए अभिलेख को ताम्र पत्र-लेख, मूर्ति पर लिखे गए अभिलेख को मूर्ति-लेख कहा जाता है ।

प्राचीन भारत पर प्रकाश डालने वाले अभिलेख

अधिकांशतः पाली, प्राकृत और संस्कृत भाषाओं में लिखे गए हैं। लेकिन कुछ अभिलेख तमिल, मलयालम, कन्नड व तेलगू भाषाओं में भी लिखे गए हैं। अधिकांश अभिलेखों की लिपि 'ब्राही' है, जबकि कुछ अभिलेख खरोष्ठी लिपि में भी लिखे हुए प्राप्त हुए हैं।

सबसे प्राचीन अभिलेख मौर्य शासक अशोक के हैं। अशोक के अधिकतर अभिलेख 'ब्राह्मी लिपि' में हैं। ब्राह्मी लिपि को सबसे पहले 1837 ई.में जेम्स प्रिंसेप नामक विद्वान ने पढ़ा था। अशोक के अभिलेखों से तत्कालीन धर्म और राजत्व के आदर्श पर पर्याप्त प्रकाश पड़ता है।

अशोक के बाद के अभिलेखों को दो वर्गों- सरकारी अभिलेख और निजी अभिलेख में बाँटा जा सकता है । सरकारी अभिलेख, राजकवियों द्वारा लिखी हुई प्रशस्तियाँ और भूमि अनुदान पत्र हैं। निजी अभिलेख अधिकांशतः मन्दिरों में या मूर्तियों पर उत्कीर्ण हैं।

प्राचीन भारत पर प्रकाश डालने वाले अभिलेखों में

अशोक के अभिलेखों के अतिरिक्त समुद्रगुप्त का प्रयाग प्रशस्ति अभिलेख, कलिंग राज खारवेल का हाथीगुम्फा अभिलेख, गौतमी बलश्री का नासिक अभिलेख, रुद्रदामन का गिरनार अभिलेख, स्कन्दगुप्त का भितरी स्तम्भलेख, चन्द्रगुप्त द्वितीय का महरौली लौह स्तम्भ लेख, चालुक्य नरेश पुलकेशिन द्वितीय का एहोल अभिलेख, प्रतिहार नरेश मिहिरभोज का ग्वालियर प्रशस्ति अभिलेख और बंगाल के शासक विजयसेन का देवपाड़ा अभिलेख आदि महत्वपूर्ण हैं।

References: Internet & Competitive books.